Date ___/___/_____ Page No.: _____

सम-सीमान्त उपयोगिता नियम
(Law of Equimarginal Utility)

इस नियम को उपभोग के क्षेत्र का आधारभूत नियम के रूप में जाना जाता है चूँकि इस नियम का प्रतिपादन प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो० एच० एच० गोसेन ने की अतः इस नियम को गोसेन का दूसरा नियम के रूप में कहा जाता है।

प्रो० मार्शल ने इस नियम को परिभाषित करते हुए कहा है कि "यदि किसी व्यक्ति के पास ऐसी वस्तु है, जिसे वह विभिन्न प्रकार से प्रयोग कर सकता है तो वह उसका अनेक प्रयोगों में इस प्रकार वितरण करेगा कि सीमान्त उपयोगिता प्रत्येक में समान हो।" दूसरी तरफ प्रो० सैमुअल्सन ने इसका विश्लेषण करते हुए कहा है कि "एक उपभोक्ता इस समय अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है जब सब वस्तुओं की सीमांत उपयोगिता तथा कीमत का अनुपात बराबर होता है" अर्थात् सम-सीमान्त उपयोगिता नियम के द्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि जब व्यय की प्रत्येक सीमान्त इकाई से प्राप्त उपयोगिता समान होता है तो उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि की प्राप्ति होती है। इस नियम का विस्तृत विश्लेषण प्रो० मार्शल द्वारा प्रस्तुत किया गया तथा उन्होंने इस संदर्भ में कुछ मान्यताओं की भी चर्चा की।

Maharaza

क्रम-सीमान्त उपयोगिता नियम की मान्यताएँ :—

(I) क्रमागत उपयोगिता ह्रास नियम की सभी मान्यताएँ :- चूँकि यह नियम क्रमागत उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित है इसलिए इस नियम की सभी मान्यताएँ इस पर लागू होती है जैसे कि वस्तु की गुण एवं मात्राएं समान रहनी चाहिए, उसकी इकाई उचित होनी चाहिए एवं उपभोक्ता की आय एवं मानसिक स्थिति पूर्ववत् रहनी चाहिए।

(II) मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता स्थिर :— यह नियम इस मान्यता पर आधारित है कि मुद्रा की क्रयशक्ति एवं सीमान्त उपयोगिता स्थिर रहता है

(III) मनुष्य का विवेकशील होना :— इस नियम की एक मान्यता यह भी है कि व्यक्ति विवेकशील होता है और अपना व्यय अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए करता है

(IV) वस्तु के सीमान्त उपयोगिता का ह्रास :- इस नियम की चौथी मान्यता यह है कि प्रत्येक उपभोक्ता को वस्तुओं पर किए गए व्यय से उत्पन्न होने वाले सीमान्त उपयोगिता का पूरा ज्ञान होता है

(V) उपयोगिता की माप :— यह सिद्धांत इस मान्यता पर आधारित है कि उपयोगिता का माप मुद्रा रूप से किया जा सकता है

Maharaza

सम-सीमान्त उपयोगिता नियम का आधार सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम है किसी वस्तु की अधिक इकाई खरीदने से उससे प्राप्त होने वाली उपयोगिता उससे पूर्व वाली इकाई से कम होता है इसलिए उपभोक्ता उपयोग करते समय विभिन्न वस्तुओं की विभिन्न इकाइयों से प्राप्त होनेवाली उपयोगिता की तुलना दूसरी वस्तुओं की इकाइयों से करता है इस तुलना के परिणामस्वरूप उपभोक्ता उसी वस्तु की इकाई को पहले खरीदता है जिससे अधिक उपयोगिता प्राप्त होती है तथा कम उपयोगिता प्राप्त होनेवाली वस्तुओं की इकाई को बाद के क्रम में रखता है

उपभोक्ता अपने सम्पूर्ण व्यय को इस प्रकार व्यवस्थित करता है कि सभी वस्तुओं की सीमान्त इकाइयों से समान उपयोगिता प्राप्त हो। इस बिन्दु पर उपभोक्ता की संतुष्टि अधिकतम होगी। सम-सीमान्त उपयोगिता नियम की क्रियाशीलता के निम्नांकित कारण हैं:-

(i) मनुष्य की आवश्यकताएँ अनन्त हैं

(ii) आवश्यकताओं को पूर्ण करनेवाले साधन सीमित होते हैं तथा इन साधनों का एक से अधिक उपयोग होता है

Date ___/___/________ Page No.: ________

(iii) व्यक्ति अपने सीमित साधनों से अधिकतम संतोष प्राप्त करना चाहता है।

(iv) व्यक्ति का आचरण विवेकपूर्ण होता है।

सम-सीमान्त उपयोगिता नियम की आलोचनाएँ :-

सम-सीमान्त उपयोगिता नियम की आलोचनाओं को संक्षिप्त रूप से निम्नांकित तरीके से व्याख्या की जा सकती है :-

(a) दोषपूर्ण मान्यताएँ।

(b) वस्तुओं के विभाजन की कठिनाईयाँ।

(c) वस्तुओं के कीमत में परिवर्तन।

(d) रीती-रिवाज में परिवर्तन।

(e) फैशन में परिवर्तन।

व्याख्यान लेखक,
डॉ० अभय कुमार पाठक
अर्थशास्त्र विभाग,
मारवाड़ी महाविद्यालय,
दरभंगा।
Mob - 9939036994

Maharaza